ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 318-320
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

रगों का संयोजन अजंता के भित्ति चित्रों में

डॉ0 देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी
ओम गायत्री नगर, चांदपुर सलोरी, प्रयागराज (उ0प्र0) भारत

Received-16.09.2022, Revised-21.09.2022, Accepted-27.09.2022 E-mail: ishwarartaligarh@gmail.com

सारांशः – किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्.ति उनकी आत्मा होती है। भारतीय कला मानव सभ्यता एवं संस्.ति की पहचान है। संस्.ति के अनन्त काल प्रवाह में अपनी पुरातन सभ्यता के प्रति यह देश सदा जागरूक रहा है, यही कारण है कि इस देश ने अपनी सांस्.तिक परम्परा को बनाये रखा जिससे भारतीय कला के इतिहास में स्वर्ण युग का उदय होता है, क्योकि उस समय बौद्व धर्म पूर्ण रूप से विकसित हो चूका था। यह युग संस्कृति, साहित्य के सृजन और धार्मिक चेतना का युग था। इनकी कला के प्रभाव अनेक कला केन्द्रो पर दर्शनीय हैं। उस समय बौद्व धर्म पूर्ण रूप से विकसित हो चूका था, जो अंजन्ता की चित्रा.तियों में देखने को मिलते हैं। अंजन्ता की कला उस काल में अपनी पराकाष्ठा पर थी। बौद्ध काल में चित्रण न सिर्फ मनो विनोदार्थ में था अपितु धर्म प्रचार–प्रसार के साथ–साथ तत्कालीन समाज का बोध भी कराता है। चित्रों में रंगों का संयोजन ऐसा है, जो भाव व्यंजना की दृष्टि से अदभुद है।

कुंजीभूत शब्द– अजन्ता, बौद्व कला, रंग, संयोजन, जातक कथा आदि।

भारतीय चित्रकला का वास्तविक प्रतिनिधित्व अंजन्ता गुफाओं में बने चित्रों से सांस्.तिक, धार्मिक और राजनीतिक इतिहास का महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करता है। अंजन्ता के भित्ति चित्र सबसे प्राचिन भित्ति चित्रों में से एक है जिसकी चमक हजारों वर्ष बीतने के बाद भी आधुनिक समय में विद्वानो के लिए आश्चर्य का विषय है। यह गुफाये अपनी जीवन्त चित्रकला के लिए प्रसिद्व हैं। इन गुफा चित्रों के विषय महात्मा बुद्ध के जन्म जन्मांतर की कथायें जो जातक कथाओं के रूप में विख्यात हैं।

भारत पूर्वी देशों में एक समृद्धशाली देश रहा है जो बौद्ध धर्म की सहिष्णुता और उदारता के लिए विख्यात हो रहा था और समस्त भागो के लोग बौद्व धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भारत आते थे जिसका प्रभाव यहाँ की कला पर पड़ा। प्रसिद्व तिब्बती इतिहासकार ''लामा तारानाथ'' ने यह उल्लेख किया है कि जहॉ जहॉ बौद्व धर्म फैला वहॉ– वहॉ दक्ष चित्रकार पाये गये।[1] यह बात मुख्य रूप से भारतीय चित्रकला में देखी जा सकती है। विशेष रूप से अंजन्ता की बौद्व कला पर।

अजन्ता के गुफाचित्र महाराष्ट्र के औरगांवाद जिले में स्थित हैं अजन्ता में कुल तीस प्राचीन गुफाये है जो पहाड़ियो को काट कर बनाये गये है जिनमें दो प्रकार की गुफाओ का निर्माण बौद्व भिक्षुओ ने किया– जिनमे पहला चौत्य गुफा जिसमें भिक्षुओ के उपासना गृह हैं और दूसरा बौद्व विहार जहॉ भिक्षुओ का निवास स्थान है।

इन गुफाओ में भगवान बुद्व के जन्म जन्मांतर के जातक कथाओ का अंकन किया गया है। यहा के कला मण्डपो में ये गुफायें वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला का उत्तम संगम है।

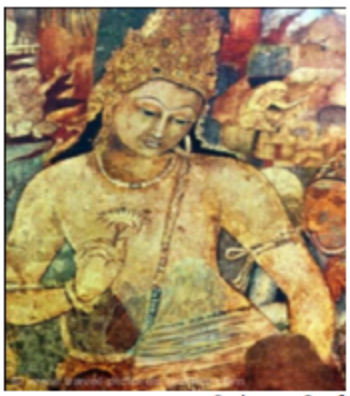

इन गुफा–मंदिरों का निर्माण काल अत्यधिक लम्बा है इसका निर्माण ई0 पू0 लगभग दूसरी सदी से प्रारम्भ होता है और सातवी सदी के आते–आते समाप्त हो जाता है, इनका निर्माण शुंगवंशीय राजाओं के शासन काल से प्रारम्भ हुआ और कण्व, सातवाहन, वकाटक और गुप्त राजवंशों के शासन काल को पार करता हुआ चालूक्य वंश के अभ्युदय के साथ समाप्त हो जाता है।[2]

सर्वप्रथम 1819 में इन गुफाओं का ज्ञान हुआ जो मद्रास के कुछ सैन्य अधिकारियों द्वारा कला जगत व कला मर्मज्ञो से बौद्व कला की इस महान् उपलब्धिं से परिचय हो सका।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

वर्तमान में मात्र छः गुफाओं के चित्र ही सुरक्षित बचे है जिनमें गुफा स0–1,2,9,10,16,17 इनमें से 16 वी 17 गुफा के चित्र सर्वोत्कृष्ट है ये दोनो गुफा में सर्वाधिक चित्र प्राप्त होते है जिनमें नन्द की दीक्षा, मरणासन्न राजकुमारी, आकाशचारी अप्सरा, बुद्ध के जीवन से सम्बधित चित्र, सुजाता से खीर ग्रहण, हस्ति जातक, महाउम्मग जातक, 17 वी गुफा में जीवन चक्र, राजदम्पति, भिक्षादान, आकाशचारी गर्न्धव इन्द्र अप्सरा, मानषी बुद्व, सिंहलावदान, षडदंत जातक, महाकवि जातक, हस्ति जातक, हस जातक, विश्वंतर जातक, सूंतसोत जातक, मत्स्य जातक, साम जातक आदि का सुन्दर अंकन किया गया है।3 अजंता के कलाकारों का प्रिय विषय छदन्त जातक कथा 10 वी गुफा में पुनः चित्रित किया गया है, गुफा सख्या दो में अंकित प्रमुख चित्रों में महाहंस जातक, माया देवी का स्वप्न, बुद्ध जन्म, श्रावस्ती का चमत्कार, विदुर पंडित की कथा, झूला झुलती हुई राजकुमारी, छन्तिवादी जातक, सर्वनाश आदि चित्र उल्लेखनीय है।

अजन्ता बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र है इसीलिए यहॉ भगवान बुद्ध की लौकिन और पारलौकिक छवि का एक धरातल पर ही चित्रण करके कलाकार नें कल्पना, वृद्वि तथा तकनीकी महानता का परिचय दिया है।[4]

अजंता भित्ति चित्रों में रंगो का संयोजन अदभुत है केवल खनिज रंगो का प्रयोग किया गया है जिससे चूने का प्रभाव से हल्के ना पडेध। इन चित्रों में रंगो का संयोजन ऐसा है, जो भाव व्यंजना को अभिव्यक्त करता है, गेरू, रामरज, हरा, काजल, नील, चूने के रंगों का विशेष प्रयोग हुआ है। रंगो का संयोजन इस तरह से किया गया है कि चित्रों में विविधता पैदा हो गयी है। कही–कही गहरे रंग लगे हैं परन्तु उनमे भारीपन नहीं है। सर्वप्रथम चित्राधार पर हल्के गेरू रंग से रेखांकन करने के बाद खनिज रगों से रंगांकन किया गया है।

इन भित्ति–चित्रों में प्राकृतिक रंगो का प्रयोग हुआ है। जिससे वह चूने के प्रभाव ना पड़ सकें इस शैली कें चित्रों में जिन रंगो का प्रयोग किया गया है वह चूने के प्रभाव से सुरक्षित रह सके। स्वतत्रता पूर्वक प्रयोग किया गया है। जिन रंगो का स्वतन्त्रता पूर्वक प्रयोग किया गया है उन रंगो में सफेद, लाल (धूसर) भूरे रंग प्रमुख रूप से हैं। स्थानीय रंगों का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया है।

नीले रंग का प्रयोग गुफा संख्या 1 में 'पद्मपाणि बोधिसत्व के चित्र में बडी ही कुशलता से किया गया है। जिसमें वे अपने बाये हाथ में एक नीला कमल लिये हुये है, इस पुष्प के ऊपर गहरे नीले रंग की आभा दिखायी गयी है। सफेद रंग अपारदर्शी है, उसे चूने व खड़िया से बनाया गया है लाल व भूरे रंग लौह–अयस्क खनिज रंग है।[5]

इसी तरह हरा रंग स्थानीय खनिज से बनाया गया है जो टेरावर्त है। नीला रंग फारस से आयत एक बहुमुल्य पत्थर से बनाया जाता था जिसे लेपिसलाजुली कहा जाता है। पीले रंग को लिए प्र.तिक रूप से उपलब्ध पीले रंग का प्रयोग है। इन रगों में बाइंडर के रूप में गोद मिलाकर चित्रण किया जाता था। काला रंग काजल से तैयार किया गया है।

इसी के साथ ही बौद्व कलाकार अपने स्थनीय रंगो, लाल, पीला, भूरा और काला आदि को कुंची से लगाते थे। इसके बाद आ.तियों की बाहय रेखाओं को पुनः काले और भूरे रंग से गहरा करके सही–सही चित्रित करते थे।[6]

अजन्ता के कलाकारो ने मुख्य छः रंगो का प्रयोग किया है उन्ही के मिश्रण से अन्य रंग तैयार कर लिये जाते थे। ये मुख्य रंग, पीला, लाल, नीले, हरा, काला, और सफेद केवल छः रंगो के जरिये अंजन्ता के कलाकारो ने पूरी अजन्ता की कहानी रच दिया है। जिसमे हर रंग की अपनी पहचान है। कहती है। साथ ही साथ अंजन्ता में रासायनिक रंगो का भी प्रयोग हुआ है, जैसे नीले के लिए नीले पत्थर का शायद बाहर से मगाया गया हो क्योकि इस क्षेत्र में नही पाया जाता था। सफेद, लाल, पीला, हरा, स्थानीय रूप से उपलब्ध चट्टानों के अवशेष है जो चूर्ण के रूप में प्राप्त है।

अजन्ता के रंग विद्यान के .ष्टि से गुफा संख्या 17 मे प्रसिद्व चित्र महाहंस जातक का है। रंग योजना के आधार पर इस चित्र संर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

निष्कर्ष– अजंन्ता की कलात्मक परम्परायें भारत में समकालीन समाज की कला और समाजिक सांस्.तिक धार्मिक वा राजनीतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण तथा दुर्लभ नमुना प्रस्तुत करती है। उस समय के कलाकारों ने हर जातक कथाओं का बहुत सुन्दर तरीके से अपनी तूलिका के माध्यम से व्यक्त किया है। चाहे राजा हो या रंग इन कुशल चित्रकारों को तत्कालीन समाज एवं परिवेश का पूर्ण ज्ञान था। यधपि इन चित्रों की चमक प्रर्याप्त धूमिल पड़ चूकी है, तथापि रंग आज भी प्रभावषाली प्रतीत होते है शरीर तथा वस्त्रों का रंग लावण्ड्युक्त और संगतिपूर्ण है। झरोखो के उपर इन्ही रंगों से बना आलेखन चित्रित है, जो संन्तुलन व समन्वय को दर्शाता है।

अजन्ता के चित्रों में भारतीय कला को क्षेत्र में नये आदर्शो को देखा जाता है चित्रों में करूणा, दया, ममता, समर्पण, लावण्य, आदि तत्वो का समन्वय एक साथ हुआ है। कम संसाधनो एवं तकनीक की कमी के बावजूद जो चित्रण उन्होने उस काल में किया उसका आज भी का कोई सानी नही है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय चित्रकला का इतिहास लेखक डा0 अविनाश बहादूर वर्मा प्रकाशन प्रकाश वुक डिपो– बरेली,– पृष्ठ सं0 46.
2. भारतीय चित्रकला का इतिहास लेखक डा0 श्याम बिहारी अग्रवाल, प्रकाशन,–रूपशिल्प प्रकाशन इलाहावाद– पृष्ठ सं0 71.
3. ,, उपरोक्त ,, – पृष्ठ सं0 75.
4. www.prolha001.com
5. भारतीय चित्रकला का इतिहास लेखक डा0 अविनाश बहादूर वर्मा,प्रकाशन– प्रकाश बुक डिपो–बरेली – पृष्ठ सं0 82.
6. हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट इन इण्डिया एण्ड सीलोन' वी0ए0 स्मिथ –पृष्ठ सं0 90.

*****